17 अक्टूबर 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 14 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (द्वितीय), 2014 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

शाश्वत तीर्थराज सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखरजी में -

निजात्मकेलि शिक्षण शिविर एवं बालसंस्कार ज्ञान वैराग्य महोत्सव संपन्न

सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड) : यहाँ **कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान,** उज्जैन एवं **पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट,** जयपुर के **संयुक्त तत्त्वावधान में तीर्थधाम मंगलायतन** एवं **श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट** के सहयोग से जैन युवा फैडरेशन उज्जैन द्वारा शाश्वत तीर्थराज सिद्धक्षेत्र **श्री सम्मेदशिखरजी में** दिनांक 29 सितम्बर से 5 अक्टूबर तक निजात्मकेलि शिक्षण शिविर एवं बालसंस्कार ज्ञान वैराग्य महोत्सव अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

इस शिविर में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा (1) शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखर, (2) भगवान महावीर : एक वीतरागी व्यक्तित्व, (3) महावीर की वाणी का प्रतिपादन केन्द्र बिन्दु : भगवान आत्मा, (4) प्रतिपादन शैली : अनेकान्त और स्याद्वाद, (5) भगवान बनने का उपाय : भेदविज्ञान, विषयों पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

इसके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा समयसार के सर्वविशुद्ध ज्ञानाधिकार की गाथा 308 से 320 पर, पण्डित दादाश्री विमलचंदजी झांझरी उज्जैन द्वारा नियमसार की गाथा 47 व 48 पर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा ज्ञानस्वभाव पर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी के प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर का उद्घाटन श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ द्वारा एवं ध्वजारोहण श्री स्वप्निलजी जैन सुपुत्र श्री पवनजी जैन मंगलायतन के करकमलों से हुआ। शिविर के धर्मचक्रवर्ती के रूप में श्री विलासभाई जैन शिकागो उपस्थित थे।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा ज्ञानस्वभाव - ज्ञेयस्वभाव, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक का सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि प्रकरण, दोपहर में पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन द्वारा समयसार की 17-18वीं गाथा एवं पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा नियमसार के आधार से सिद्धों के 8 मूलगुण विषय पर कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में सिद्ध परमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित अजितजी अचल ग्वालियर एवं पण्डित विरागजी शास्त्री जलबपुर द्वारा संपन्न हुये।

शिविर के विशिष्ट कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिनांक 3 अक्टूबर को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन उज्जैन द्वारा 'भरत-बाहुबली' एवं 'अकलंक-निकलंक' नाटक का मंचन किया गया। दिनांक 4 अक्टूबर को स्व. श्री बालचन्दजी पाटनी कोलकाता की स्मृति में सभा का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री कमलजी पाटनी कोलकाता ने की तथा अनेक वक्ताओं ने उनके द्वारा जीवन भर किये तत्त्वप्रचार के कार्यों का स्मरण किया।

शिविर में मैं कौन हूँ ऑडियो बुक, दृष्टि का विषय, आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी आदि पुस्तकों का विमोचन हुआ तथा आचार्य कुन्दकुन्द पर एनिमेशन मूवी के अतिरिक्त बाल कविताएं आदि अनेक सी.डी. का विमोचन किया गया।

मई 2015 में ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर हेतु मेरठवासियों द्वारा आमंत्रण दिया गया।

इस अवसर पर लगभग 80 हजार रुपये का सत्साहित्य एवं 4,42,500 घंटों की सी.डी. व डी.वी.डी. घर-घर पहुँचे।

संपूर्ण शिविर ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, श्री प्रदीपजी झांझरी एवं श्री नगेशजी पिड़ावा के श्रम से सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। सभी कार्यक्रमों का कुशल संचालन अरिहंतप्रकाशजी झांझरी ने किया।

प्रथम दिन श्रीजी की शोभायात्रा कुन्दकुन्द कहान नगर से कार्यक्रम स्थल मध्यलोक जिनालय परिसर तक और अंतिम दिन मध्यलोक से कहान नगर तक रत्नत्रय रैली निकाली गई। रैली के उपरान्त कुन्दकुन्द कहान नगर स्थित जिनालय के शिखर पर कलश स्थापन का सौभाग्य श्री कैलाशजी सेठी जयपुर, श्री विलासभाई शिकागो, श्री प्रमोदभाई शिकागो एवं श्री जिनेशभाई शाह परिवार अहमदाबाद को प्राप्त हुआ।

अंतिम दिन सामूहिक तीर्थयात्रा का भी आयोजन हुआ तथा 2019 में पुन: सम्मेदशिखर में 5 वर्षीय शिक्षण शिविर में धर्मलाभ लेने हेतु सभी साधर्मीजनों का आह्वान किया गया।

बाल संस्कार शिविर - शिविर में बाल संस्कार शिविर के अन्तर्गत विभिन्न बाल कक्षाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से लगभग 250 बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये। बाल संस्कार शिविर का निर्देशन ब्र. समताजी झांझरी उज्जैन एवं पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर ने किया।

श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान की पत्रिका

श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान की पत्रिका

सम्पादकीय –

क्या मुक्ति का मार्ग इतना सहज है ?

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जीवराज ने आगे कहा – ''कर्मकिशोर! तुझे भलीभाँति ज्ञात है कि मैं आजकल वीतरागी देव, निर्ग्रन्थ गुरु और अनेकांतमयी धर्म का कट्टर व परम भक्त हो गया हूँ। इसकी वजह यह नहीं कि उनकी कृपा से मेरे दुःख दूर हो गये; बल्कि समता ने जब मुझे देव के स्वरूप को समझाते समय सर्वज्ञता का स्वरूप समझाया और बताया कि सर्वज्ञता ही वीतराग धर्म प्राप्ति का प्रबल साधन है। इस अपेक्षा सर्वज्ञदेव ही धर्म के प्राण हैं। सच्चे देव की सर्वज्ञता की श्रद्धा से हमें वीतरागता रूप धर्म कैसे प्रगट होता है? राग–द्वेष कैसे कम होते हैं? तथा कषायें कैसे कृश होती हैं? और निराकुल सुख–शान्ति कैसे प्राप्त होती है? – यह सब समझाया तो मेरी तो आँखें फटीं की फटीं रह गईं। – ऐसा मैंने कभी सोचा ही नहीं था।

तीर्थंकर भगवान वीतरागी, सर्वज्ञ एवं हितोपदेशी होते हैं – ऐसी परिभाषायें तो बचपन में पढ़ीं थीं; परन्तु उनकी श्रद्धा से अपनी आत्मा में सुख–शान्ति का स्रोत कैसे बहने लगता है? इसकी खबर मुझे नहीं थी – ऐसा किसी ने बताया ही नहीं। इस दृष्टि से समता मेरी गुरु भी बन गई।

समता ने संकट के समय धैर्य बंधानेवाले भैया भगवतीदासजी का निम्नांकित भजन सुनाते हुए कहा –

'जो–जो देखी वीतराग ने सो–सो होसी वीरा रे!
अनहोनी होसी नहिं कबहूँ, काहे होत अधीरा रे!
समयो एक घटे नहिं बढ़सी, जो सुख–दुःख की पीरा रे!
तू क्यों सोच करे मन मूरख होय वज्र ज्यों हीरा रे!!'

तात्पर्य यह है कि सर्वज्ञदेव के केवलज्ञान में प्रतिबिम्बित हुए समस्त द्रव्य–गुण–पर्याय के अनुसार जिस जीव का जब जो सुख–दुःख, जीवन–मरण, असह्य पीड़ा आदि होनेवाले हैं, वे तो होकर ही रहेंगे, उसे कोई टाल नहीं सकता। इस श्रद्धा और विश्वास के बल पर सभी प्रकार के दुःख सहने की सामर्थ्य सहज में प्रगट हो जाती है।

कविवर बुधजनजी ने भी उपर्युक्त बात का ही पोषण करते हुए अपने आध्यात्मिक भजन में पाँच समवायों के माध्यम से जो सशक्त बात कही, उसने तो हृदय को ही हिला दिया। वे कहते हैं –

'जाकरि जैसे जाहि समय में जो हो तब जा द्वार।
सोबनिहै टरहै कछु नाहीं, करलीनो निरधार।।
हम को कछु भय ना रे! जान लियो संसार।।'

उपर्युक्त कथन में ज्ञानी की निर्भयता का आधार भी यही है कि मैंने संसार के स्वतंत्र परिणमन का स्वरूप अच्छी तरह से समझ लिया है। इस लोक में जिस द्रव्य की जो पर्याय जिस समय में जिसविधि से जिसके द्वारा जैसी होनी होती है, उसी द्रव्य की वही पर्याय उसी समय में उसी विधि (पुरुषार्थ) पूर्वक, उसी के निमित्त द्वारा वैसी ही होती है। उसे कोई टाल नहीं सकता। आगे–पीछे नहीं कर सकता। सुख–दुःख, जीवन–मरण सब कुछ निश्चित है। यह मैंने अच्छी तरह समझ लिया है। अतः अब मुझे कुछ भी भय नहीं है।

मैंने अब इसी वस्तुस्वरूप के आधार पर सात भयों से निर्भय रहकर सम्पूर्ण प्रतिकूलताओं को सहजता से सहन कर लिया है।

इसप्रकार समता ने मुझे सर्वज्ञता के आधार पर निर्भय रहने का महामंत्र तो दिया ही है; साथ ही कार्य सम्पन्न होने के स्वतंत्र षट्कारकों, चार अभावों, पाँच समवायों का स्वरूप समझाकर पर के कर्तृत्व से निर्भार भी किया है, पराधीनता से छुटकारा भी दिला दिया है।'' (क्रमशः)

विद्वत्संगोष्ठी संपन्न

सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड) : यहाँ निजात्मकेलि शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 30 सितम्बर को **बीसवीं सदी की आध्यात्मिक क्रांति के सूत्रधार : आध्यात्मिकसत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी** विषय पर एक विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित शांतिलालजी सोगानी महिदपुर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री रमेशजी शाह इन्दौर व श्री विलासभाई शाह शिकागो उपस्थित थे।

इस अवसर पर पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने **जैन अध्यात्म : पूज्यगुरुदेवश्री के पूर्व एवं पश्चात्**, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने **वस्तु स्वातंत्र्य के उद्घोषक पूज्य गुरुदेवश्री (क्रमबद्धपर्याय के संदर्भ में)**, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने **जैन अध्यात्म को गुरुदेवश्री की देन – निश्चय–व्यवहार का सुमेल** एवं डॉ. नेमचंदजी खतौली ने **गुरुदेवश्री की दृष्टि में कर्तृकर्म मीमांसा** विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल ने गुरुदेवश्री के व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का मंगलाचरण श्री भरतभाई मेहता सूरत एवं संचालन **पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील** ने किया।

इसके अतिरिक्त **क्रमबद्धपर्याय, मुमुक्षु की पात्रता, जैन सिद्धांत का माहात्म्य** विषयों पर भी संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

दृष्टि का विषय

5 द्वितीय प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

'समयसार परमागम की छठवीं–सातवीं' गाथा के आधार पर यह चर्चा चल रही है कि दृष्टि का विषय क्या है ?

जिस भगवान आत्मा में अपनापन स्थापित करने का नाम सम्यग्दर्शन है, जिस भगवान आत्मा को निजरूप जानने का नाम सम्यग्ज्ञान है और जिस भगवान आत्मा में रमण करने का नाम सम्यक्चारित्र है; उसी भगवान आत्मा में हमें अपनापन स्थापित करना है, उसी को निजरूप जानना है और उसी का ध्यान करना है।

यदि उस भगवान आत्मा के स्वरूप को समझने में कोई भूल रह जाती है तो मिथ्यात्व का अभाव नहीं होगा।

जिसप्रकार देहादिक परपदार्थ में एकत्व के कारण मिथ्यात्व ही रहता है, उसीप्रकार यदि हमने किसी अन्य पदार्थ को आत्मा जानकर उसमें एकत्व स्थापित कर लिया तो भी हमें मिथ्यादर्शन की ही प्राप्ति होगी।

छठवीं गाथा में प्रमत्त–अप्रमत्त दशाओं से और सातवीं गाथा में गुणभेद से भिन्नता की बात कही है।

इन दोनों ही गाथाओं में पर्याय से भिन्नता की ही बात है; क्योंकि **प्रमत्त और अप्रमत्त दशायें तो पर्यायें हैं ही; साथ ही गुणभेद भी पर्याय ही है; क्योंकि वह भी पर्यायार्थिकनय का विषय है।**

यह तो पहले स्पष्ट किया ही जा चुका है कि जो–जो पर्यायार्थिक नय का विषय बनेगा; उन सभी की पर्याय संज्ञा है।

सातवीं गाथा में भगवान आत्मा में गुणों का निषेध इष्ट नहीं है; क्योंकि अनन्त गुणों का अखण्डपिण्ड तो भगवान आत्मा है ही। **निषेध तो गुणभेद का है और गुणभेद पर्यायार्थिकनय का विषय होने से पर्याय ही है; यह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।**

यहाँ एक **प्रश्न** सम्भव है कि यदि दृष्टि के विषयभूत आत्मा में पर्याय शामिल नहीं है तो फिर उस आत्मा के द्वारा जानने का काम भी सम्भव नहीं होगा; क्योंकि जानना तो स्वयं पर्याय है। जाननेरूप पर्याय के कारण ही आत्मा ज्ञायक कहा जाता है। जाननेरूप पर्याय के निषेध हो जाने पर आत्मा को ज्ञायक कहना भी सम्भव नहीं होगा?

(क्रमशः)

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर द्वारा –

पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन सम्मानित

सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड) : यहाँ 7वें पंचवर्षीय निजात्म केलि शिखर शिविर के अवसर पर 5000 से अधिक जनसमुदाय के मध्य शिविर के स्वप्नदृष्टा एवं अन्य अनेक संस्थाओं के संचालक पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन का डॉ. हुकमचंद भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर द्वारा भव्य सम्मान किया गया।

इस समारोह में अध्यक्ष के रूप में **पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई** एवं मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ थे। कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर एवं श्री प्रदीपजी झांझरी का विस्तृत परिचय **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** ने दिया।

इस अवसर पर **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने पण्डित प्रदीपजी झांझरी के कार्यों एवं नियमितता की भूरी–भूरी प्रशंसा की तथा विद्वानों के सम्मान की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि विद्वानों का सम्मान करने वाली समाज विद्वानों से समृद्ध होती है।**

अन्य वक्ताओं में श्रीमती अर्चना जैन ग्वालियर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, श्री भरतभाई मेहता सूरत, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, श्री जम्बूकुमारजी जैन धवल उज्जैन एवं सभाध्यक्ष पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई का उद्बोधन हुआ।

सम्मान समारोह के अन्तर्गत सर्वप्रथम श्री प्रदीपजी झांझरी की धर्मपत्नी श्रीमती अर्चना जैन एवं पुत्र–पुत्रवधु श्री ज्ञाता झांझरी–श्रीमती निकिता झांझरी का सम्मान क्रमशः श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, डॉ. लक्ष्मी भारिल्ल एवं श्रीमती पूजा भारिल्ल द्वारा किया गया। तत्पश्चात् पण्डित प्रदीपजी झांझरी को डॉ. भारिल्ल द्वारा श्रीफल, श्री विपिनजी जैन द्वारा 10 हजार रुपये की नकद राशि, श्री अनुभव भारिल्ल द्वारा शॉल एवं श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ द्वारा प्रशस्ति–पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया। साथ ही अन्य अनेक संस्थाओं द्वारा भी माल्यार्पण द्वारा सम्मानित किया गया।

अंत में पण्डित प्रदीपजी झांझरी ने अपने उद्बोधन में सम्मान के लिए आभार व्यक्त करते हुए डॉ. हुकमचंद भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा किए गये कार्यों एवं विजन की प्रशंसा की। साथ ही सम्मान राशि में 10 हजार रुपये अपनी ओर से मिलाकर कुल 20 हजार रुपये शिक्षण शिविर खर्च में देने की घोषणा की।

सभा का संचालन **श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई** ने किया।

जैनत्व जागरण बाल संस्कार शिविर संपन्न

रायपुर (छत्तीसगढ) : यहाँ शंकर नगर स्थित श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर में बच्चों में जैनधर्म के संस्कारों के बीजारोपण हेतु जैनत्व जागरण बाल संस्कार शिविर का आयोजन दिनांक 28 सितम्बर से 5 अक्टूबर तक किया गया। इस अवसर पर पण्डित नितिनजी शास्त्री खड़ैरी एवं पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मडदेवरा द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में अनेक बच्चों ने भाग लेकर जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

– वीरेन्द्र शास्त्री, बकस्वाहा

श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान की पत्रिका

श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान की पत्रिका

17 अक्टूबर 2014, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. PC / FN-32 / 2012-14

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्गार –

प्रत्यक्षदर्शी **क्षुल्लक श्री चिदानन्दजी महाराज** के अनुभव पढिये–

''जब मैं पैदल यात्रा करता हुआ जैनबद्री, मूडबद्री, गिरनार की यात्रा के पश्चात् चिर-अभिलषित अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए चातुर्मास के समय सोनगढ पहुँचा और चार मास के स्थान पर चौदह मास वहाँ रहा, वहाँ मैंने स्वामीजी की धर्मदेशना श्रवण की और वहाँ का अपूर्व शान्त वातावरण देखा तो जो आनन्द आया उसको मैं प्रगट करने में असमर्थ हूँ। यही कारण है कि जो वहाँ का वातावरण एक बार अवलोकन कर लेता है, वह दूसरे वक्त जाये बिना नहीं रह सकता ....

जब स्वामीजी से निश्चय-व्यवहार, निमित्त-उपादान, कर्त्ता-कर्म, निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध के विषय में सुना व चौदह माह की अवधि में जो अनुभव किया तो जीवन की दिशा ही बदल गई। वहाँ रहने वाले मुमुक्षु निश्चयात्मक धर्म पर तो अटूट श्रद्धा रखते ही हैं; क्योंकि वास्तव में धर्म तो वही है, परन्तु साथ ही जिनेन्द्र-पूजन, भक्ति, दान, स्वाध्याय आदि की प्रवृत्ति भी उनमें ही देखी जाती है और यह सब स्वामीजी के निश्चय-व्यवहार की सन्धिपूर्वक उपदेश करने की शैली का प्रतीक है[1]।

क्षुल्लक श्री सुरत्नसागरजी लिखते हैं –

स्वामीजी ने जो जैनधर्म का प्रकाश किया वह किसी ने नहीं किया। जब समाज अज्ञान-अंधकार में डूबा हुआ था, क्रियाकाण्ड में धर्म मान रहा था, प्रवचनों में क्रियाकाण्ड, कथा-कहानी ही चलते थे; स्वामीजी ने जैनतत्त्व का उद्घाटन किया, आत्मा के धर्म के वास्तविक स्वरूप को बताया, अज्ञान-अंधकार को नष्ट किया। इन प्राणियों पर उनके महान उपकार हैं, शब्दों में नहीं कहा जा सकता। उनका उपकार कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।

हार्दिक बधाई

टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री खनियांधाना को माहेश्वरी पब्लिक स्कूल में पिछले पाँच वर्षों के उत्कृष्ट अध्यापन कार्य व विद्यालय गतिविधियों में क्रियाशील रहने हेतु द एज्यूकेशन कमेटी ऑफ द माहेश्वरी समाज जयपुर ने श्री गुलाबजी कोठारी (प्रधान सम्पादक-राजस्थान पत्रिका) की उपस्थिति में प्रशस्ति-पत्र, शॉल, श्रीफल व लेखनी भेंटकर श्रेष्ठ अध्यापक के रूप में सम्मानित किया गया।

इस उपलब्धि हेतु महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

आवश्यकता

धार्मिक कक्षाओं में अध्यापन हेतु एक पूर्णकालिक शास्त्री विद्वान की। मासिक आय 35000 से 50000 रुपये। **संपर्क सूत्र –** अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, निर्देशक, जैन अध्यात्म स्टडी प्रोग्राम, सीमंधर जिनालय, कालबा देवी रोड़, मुम्बई फोन - 9821016988

शोक समाचार

पीतमपुरा (दिल्ली) निवासी श्री हेमचन्दजी जैन का शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपका धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में बहुत योगदान रहा। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127